International Journal of Scientific Research in Science and Technology
© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

'नैषधीयचरितम्' का दार्शनिक अनुशीलन

डॉ.दीपमाला उपाध्याय
भूतपूर्व शोध–छात्रा, साहित्य विभाग,
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत।

मनुष्य एक चिंतनशील प्राणी है। सोचना मानव का विशिष्ट गुण है और अपने इसी गुण के कारण वह पशुओं से भिन्न समझा जाता है। अरस्तू ने मनुष्य को विवेकशील प्राणी कहकर उसके स्वरूप को प्रकाशित किया है। मनुष्य क्या है? जीवन का क्या लक्ष्य है? आत्मा क्या है ? विश्व का स्रष्टा कौन है? इत्यादि अनेक प्रश्न है जिनका युक्तिपूर्वक उत्तर देने का प्रयास है दर्शन। भारत में फ़िलासफ़ी को 'दर्शन' शब्द 'दृश' धातु से बना है जिसका अर्थ 'जिसके द्वारा देखा जाय' भारत में दर्शन उस विद्या को कहा जाता है जिसके द्वारा तत्व का साक्षात्कार हो सकें। भारत में दर्शन का अनुशीलन मोक्ष के लिए किया गया है।

भारतीय दर्शन और पश्चिमी दर्शन के स्वरूप की तुलनात्मक व्याख्या से यह कहा जा सकता है की पश्चिमी दर्शन सैद्धान्तिक है। पश्चिमी दर्शन का आरंभ आश्चर्य एवं उत्सुकता से हुआ है।वहाँ का दार्शनिक अपनी जिज्ञासा को शान्त करने के उद्देश्य से विश्व, ईश्वर और आत्मा के सम्बन्ध में सोचने के लिए प्रेरित हुआ है।

अत: दर्शन को पश्चिम में साध्य के रूप में चित्रित किया गया है। इसके विपरीत भारतीय दर्शन व्यावहारिक है ।दर्शन का आरम्भ आध्यात्मिक असंतोष से हुआ। भारत के दार्शनिकों ने विश्व में विभिन्न प्रकार के दु:खों को पाकर उनके उन्मूलन के लिए दर्शन की शरण ली।भारत में दर्शन का चरम उद्देश्य प्राप्ति में सहायता प्रदान करना। इस प्रकार पश्चिम में दर्शन को साध्य एवं भारत में साधन मात्र माना गया है। भारतीय दर्शन की काल के आधार पर तीन कालों में विभक्त किया गया है।

1– वैदिक काल

2– महाकाव्य काल

3– सूत्रकाल

भारतीय दर्शन का प्राचीनतम एवं आरम्भिक अंग 'वैदिक काल' कहा जाता है । इस काल में वेद एवं उपनिषद् जैसे महत्वपूर्ण दर्शनों का विकास हुआ है । भारतीय दर्शन का दूसरा काल महाकाव्य काल है । इस काल में रामायण और महाभारत जैसे धार्मिक एवं दार्शनिक ग्रन्थों की रचना हुई ।बौद्ध

IJSRST2074144 | Received : 05 March 2018 | Accepted : 28 April 2018 | March-April-2018 [(4)7 | 1078-1080]

एवं जैन धर्म भी इसी काल की देन है। भारतीय दर्शन की तीसरा काल 'सूत्रकाल' कहलाता है ।इस काल में सूत्र साहित्य का निर्माण हुआ । इसी काल में न्याय वैशेषिक सांख्ययोग मीमांसा और वेदान्त जैसे महत्वपूर्ण दर्शनों का निर्माण हुआ ।भारतीय दर्शन को दो भागों आस्तिक एवं नास्तिक में बाटा गया।मीमांसा ,वेदान्त, सांख्ययोग । न्याय तथा वैशेषिक तथा नास्तिक के अंतर्गत चार्वाक बौद्ध एवं जैन दर्शन आते हैं।कुछ पाश्चात्य विद्वानों ने भारतीय दर्शन को निराशावाद कहा है। निरासावाद उस सिद्धान्त को कहते है जो विश्व को विषादमय चित्रित करता है । निरासावाद का अर्थ 'कर्म को छोड़ देना' इसके विपरीत भारतीय दर्शन में कर्म करने का आदेश दिया गया है । इस प्रकार भारतीय विचारधारा को निरासावादी कहना गलत होगा।

नि:संदेह भारतीय दार्शनिक विश्व को दु:खमय मानते है ,लेकिन दु:खों को देखकर मौन नहीं रहते बल्कि दु:खों के कारण जानने का प्रयास करते हैं दु:ख निरोध को भारत में मोक्ष कहा जाता है । चार्वाक को छोड़कर सभी दर्शन मोक्ष को जीवन का चरम लक्ष्य मानता है ,व आत्मा की सत्ता में विश्वास करता है । बुद्ध ने क्षणिक आत्मा की सत्ता स्वीकार की है । जैनियों ने जीवों को चैतन्य स्वरूप तथा मीमांसा ने नित्य एवं विभु माना है । इसके अलावा भारतीय दर्शन 'कर्म सिद्धान्त' पर विश्वास करते हैं । चार्वाक को छोडकर सभी दार्शनिक वैदिक तथा अवैदिक पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं ।वैदिक काल का पुनर्जन्म विचार उपनिषद् में पूर्णरूप से विकसित हुआ । न्याय वैशेषिक दर्शन में पुनर्जन्म की व्याख्या नवजात शिशु के हँसने और रोने से की है ।सांख्य योग के अनुसार आत्मा एक शरीर से दूसरे शरीर में नहीं प्रवेश कर सकती ।आलोचकों ने पुनर्जन्म के विचार को भ्रांतिमूलक कहा है भारत के दार्शनिकों ने चार पुरुषार्थ माना है, जिसमें परम पुरुषार्थ मोक्ष है ।बौद्ध दर्शन में मोक्ष को निर्वाण की संज्ञा दी गयी है। न्याय वैशेषिक के अनुसार मोक्ष दु:ख के उच्छेद की अवस्था सांख्य के अनुसार त्रिविध दु:खों से निवृति एवं मीमांसा में सुख दु:ख से परे की अवस्था कहा गया है। चार्वाक को छोडकर भारत के सभी दार्शनिक अज्ञान को बंधन का मूल कारण मानते है।

वैदिक वाङ्गमय ही भारतीय दर्शन का प्रारम्भ बिन्दु है ।वेद दर्शन में अनेक देवताओं के विचार निहित है ।वैदिक काल के ऋषियों ने अग्नि ,सूर्य,चंद्रमा ,उषा ,पृथ्वी, मरुत ,वायु ,वरुण,इन्द्र सोम आदि देवताओं को आराधना का विषय माना है ।वैदिक कालीन देवता इन्द्र ,अग्नि, वरुण श्री हर्ष कृत नैषधीयचरितम् के प्रतिनायक है बाद में नल का सहायक सिद्ध होते हैं।

नैषधीयचरितम् एवं अभिरुचि - संस्कृत महाकवियों की परम्परा में चिंतामणि महामंत्रोंपासम वैदर्भी रीति रचना निपुण कविता कामिनी शृगार दाक्षिण्यदक्ष दार्शनिकत्वप्रख्या सम्पन्न महाकवि श्री हर्ष द्वादशशताब्दी में भारतभूमि को समलंकृत करने के साथ –साथ अपनी साहित्यिक एवं दार्शनिक प्रतिभा से देदीप्यमान नक्षत्र की तरह कविमंडली को चमत्कृत कर रहे हैं ।श्री हर्ष के विषय में ऐसी प्रसिद्धि है

कि इनके महाकाव्य नैषधीयचरितम् के अध्ययनार्थ समस्त भारतीय आस्तिक एवं नास्तिक दर्शनों का ज्ञान आवश्यक है। इसलिए उक्त महाकाव्य के संदर्भ में "नैषध विद्वदौषधम" यह आभाणक ख्यात है। नि:संदेश नैषधकार "दित्रा: पञ्चषा:" कोटि प्रविष्ट महाकवि है तथा उनके महाकाव्य की मूलकथावस्तु पंचमवेद कार्ष्णवेद महाभारत के वनपर्व का कथानक हैं ।इसमें नल दमयंती के दिव्यातिदिव्य दाम्पत्य का मधुर गूढ एवं प्रौढ़ वर्णन सहृदय विद्वानों की महौषधि बन गई है।"नैषध विद्वदौषधम्" इस महाकाव्य में सभी विद्या स्थानों का संग्रह है ।इसी महत्व के कारण यह महतां ह महत्त ख्यातवृत्त ऐतिहासिक महाकाव्य है। काव्य के स्वरूपोधायक एवं उत्कर्षाधायक समस्त उपादानों आस्तिक नास्तिक समस्त दर्शनों साङ्गोपाग धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, कामशास्त्र ज्ञानकर्म, उपासना प्रपत्ति, विरक्ति, शृगार करुण शान्त प्रभृति रसों का प्रतिनिधित्व इस महाकाव्य में उपलब्ध है।व्याकरण, न्याय, पूर्व मीमांसा, उत्तर मीमांसा संस्कार, कर्मकाण्ड आदि का यथा प्रसंग वर्णन महाकवि की सर्वज्ञकल्पता को व्यक्त करते हैं। काठिन्य एवं गाम्भीर्याधिक्य के कारण सरसता बाधित नहीं होती। रसचवर्णा की सूक्ष्मता भी बौद्धिक परिस्कार की अपेक्षा रखती है। महाभारत के नल यदुवंशी और इक्ष्वाकुवंशी ऋतुपर्ण के मित्र हैं। श्रीमद्भागवत महापुराण के नवम् स्कन्ध में ऋतुपर्णों नल सरव: स्मृत: है किन्तु आदिकाल में भी नल दमयंती का दिव्यदाम्पत्य स्मृत है।

नैषधीय महाकाव्य की इन्हीं ऐतिहासिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक विलक्षणताओं को देखकर इस ग्रंथ के दार्शनिक परिशीलन के प्रति मेरी प्रवृति हुई है ।

संदर्भ सूची –

1.नैषधचरितम्
2.वैशेषिक दर्शन
3.मीमांसा दर्शन
4.बौद्ध दर्शन
5.षड दर्शन
6.महाभारत